28

जगाने के लिए परमेश्वर की पुकार

(8:2, 6-13)

सशस्त्र बलों में सेवा करके आने वाले लोग बताते हैं कि उन्हें पसन्द न आने वाली बातों में से एक दिन सुबह-सुबह उन्हें जगाने के लिए बजने वाले बिगुल की आवाज़ थी। यह पाठ नींद से जगाने के लिए *परमेश्वर की* पुकार के बारे में है। सेना के बिगुल द्वारा बार-बार ''सुबह हो गई जाग जाओ, जाग जाओ, जाग जाओ'' कहकर तंग करने की तरह लोगों को परमेश्वर के इस बिगुल की आवाज़ पसन्द नहीं है।

पिछले पाठ में हमारा परिचय तुरहियों वाले सात स्वर्गदूतों से करवाया गया था:

> और मैंने उन सातों स्वर्गदूतों को जो परमेश्वर के सामने खड़े रहते हैं, देखा, और उन्हें सात तुरहियां दी गईं।
>
> और वे सातों स्वर्गदूत जिनके पास सात तुरहियां थीं, फूंकने को तैयार हुए[1] (8:2, 6)। (पृष्ठ 23 पर तुरही बजाते एक स्वर्गदूत का चित्र देखें।)

परमेश्वर की प्रेरणा रहित यहूदियों के अपोकलप्टिक साहित्य में परमेश्वर के सामने खड़े सात महादूतों की बात मिलती है,[2] जिससे कुछ टीकाकार यह निष्कर्ष निकालते हैं कि आयत 2 परमेश्वर की प्रेरणा रहित उस परम्परा को दर्शाती है। परन्तु अंक ''सात'' और परमेश्वर ''के सामने'' होने का विचार[3] दोनों ही प्रकाशितवाक्य में बार-बार आते हैं, जिस कारण ''सातों स्वर्गदूतों को, जो परमेश्वर के सामने खड़े रहते हैं'' वाक्यांश को विशेष महत्व नहीं दिया जा सकता। सात स्वर्गदूतों को सात तुरहियां बजानी थीं, जिस कारण वे वहां थे। बल यहां स्वर्गदूतों पर नहीं, बल्कि तुरहियों पर है।

परेमश्वर लोगों को जगाने की कोशिश करता है-क्योंकि उसे परवाह है

सीनै पर्वत पर व्यवस्था के दिए जाने के समय लोगों ने एक तुरही की आवाज़ सुनी थी। (निर्गमन 19:16-19)। मूसा ने चांदी की दो तुरहियां बनवाई थीं, जिनका इस्तेमाल लोगों को इकट्ठा होने, सावधान करने और विशेष अवसरों की घोषणा करने के लिए किया

जाता था (गिनती 10:1-10)। अन्ततः तुरही का बजाया जाना प्रभु के दिन की अवधारणा अर्थात न्याय के लिए प्रभु के आने के साथ जुड़ गया (यशायाह 27:13; योएल 2:1; सपन्नयाह 1:16; जकर्याह 9:14; मत्ती 24:31)। जब मैं प्रभु के अन्तिम दिन के बारे में सोचता हूं, तो मेरा ध्यान ''अन्तिम तुरही'' पर चला जाता है (1 कुरिन्थियों 15:52; देखें 1 थिस्सलुनीकियों 4:16)।

तुरही का मूल उद्देश्य ध्यान आकर्षित करना था।[4] प्रकाशितवाक्य 8 से 11 में तुरहियों के दो विशेष उद्देश्य थे: पहला परमेश्वर के लोगों की *विजय की घोषणा करना* था। तुरहियां पवित्र लोगों की प्रार्थनाओं के उत्तर में बजाई गई थीं और उसके बाद पृथ्वी पर आग फैंक दी गई (8:3, 5)। मसीही और गैर मसीही लोगों को प्रभवित करने वाली सात मुहरों के विपरीत (उदाहरण के लिए, देखें 6:9-11) सात तुरहियों का कार्य ''पृथ्वी'' पर (8:5, 7) अर्थात केवल ''उन मनुष्यों'' पर ''जिनके माथे पर परमेश्वर की मुहर नहीं है'' गिरा (9:4)। जब पहली शताब्दी के पाठकों ने सात तुरहियों की बात पढ़ी तो उन्हें यरीहो की बड़ी विजय में इस्तेमाल की गई सात तुरहियों का ध्यान आया होगा (यहोशू 6:4, 5, 20)।

प्रकाशितवाक्य 8 से 11 में सात तुरहियों का दूसरा उद्देश्य अपश्चात्तापियों को *सावधान* करना था। चेतावनी देने के लिए तुरहियों के इस्तेमाल का बाइबल का उदाहरण यहेजकेल 33 में देखा जा सकता है। बाइबल के समयों में, नगरों में चारदीवारी की पहरेदारी करने के लिए चौकीदार होते थे। चौकीदार शत्रु को आते देखकर नगर के भीतर के लोगों को सावधान करने के लिए तुरही बजाता था। यदि उसने तुरही बजाई हो, परन्तु लोगों ने उसकी चेतावनी पर ध्यान न दिया हो, तो उनका लहू उन्हीं के सिर पर होता था। दूसरी ओर यदि वह तुरही बजाने में असफल रहता तो परमेश्वर उसे उनकी मृत्यु के लिए ज़िम्मेदार ठहराता (यहेजकेल 33:1-6)।[5]

मैं क्यों कहता हूं कि प्रकाशितवाक्य 8 से 11 में तुरहियों का मुख्य उद्देश्य चेतावनी देना होता था?[6] पहले तो यह संकेत उस कार्य से मिलता है। 8:7-12 में बारह बार मिलने वाले ''एक तिहाई'' वाक्यांश पर ध्यान दें (देखें 9:15, 18)। प्रकाशितवाक्य के अंशों का मूल अर्थ ''पूरा नहीं, बल्कि एक भाग'' है।[7] होमेर हेली ने अवलोकन किया है, '''एक तिहाई भाग' एक बड़े भाग का सुझाव देता है, पर पूर्ण विनाश का नहीं, यानी जीवन अभी भी सम्भव है।''[8] न्याय अधूरा था इसलिए स्पष्टतया दण्ड ही उद्देश्य नहीं था। दूसरा, चेतावनी का विषय परमेश्वर की प्रेरणा से दी गई टिप्पणी में मिलता है, जो छठी तुरही के कार्य के बाद है:

> बाकी मनुष्यों, जो उन मरियों से न मरे थे, ने अपने हाथों के कामों से *मन न फिराया,* कि दुष्टात्माओं की, और सोने और चांदी और पीतल और काठ की मूर्तियों की पूजा न करें, जो न देख, न सुन, न चल सकती हैं; और जो खून और टोना और व्यभिचार और चोरी उन्होंने की, उनसे *मन न फिराया* (9:20, 21)।

इस बात पर बल कि लोगों ने ''मन न फिराया'' संकेत देता है कि तुरहियों का एक

उद्देश्य अभक्तिपूर्ण लोगों को मन फिराने के लिए प्रोत्साहित करना था। जॉर्ज लैड ने निष्कर्ष निकाला है कि परमेश्वर के न्याय ''लोगों को समय हाथ से निकलने से पहले निर्णय लिए जाने का समय होने पर कठिन अनुभवों से अपने घुटनों पर लाने के लिए बनाए गए'' थे।[9] परमेश्वर का तत्काल उद्देश्य नाश करना नहीं, बल्कि अनुशासित करना था। उसे पश्चात्ताप का भी उतना ही ध्यान था, जितना दण्ड देने का। जी. बी. केयर्ड ने लिखा है:

> [तुरहियों द्वारा दिया गया आयतों का संदेश] मनुष्य के पाप पर पमेश्वर का न्याय है, परन्तु यह अन्तिम न्याय नहीं था। वे मनुष्य को मन फिराने में अगुआई के लिए थीं। जब सातवीं तुरही बजाने वाले स्वर्गदूत ने कहा कि परमेश्वर ने अपनी सामर्थ अपने हाथ में ले ली है और राज करने लगा है, जिससे सब अशुद्ध वस्तुएं सदा के लिए निकाली जाएं, जब और केवल तभी मन फिराव का द्वार बन्द होगा। वह समय होगा जब ''पृथ्वी के बिगाड़ने वाले नष्ट किए जाएं (गे)'' (11:18), जब स्वभाव में और परिवर्तन करने का समय नहीं रहेगा ... (22:11) परन्तु तब तक स्वर्गीय तुरहियां अलार्म बजाना बंद नहीं करेंगी।[10]

उन लोगों के स्वभाव पर विचार करके, जिन्होंने मसीही लोगों को सताया था, मैं चकित होता हूं कि परमेश्वर ने उन्हें मन फिराने का एक और अवसर दे दिया, परन्तु पहले हमने देखा था कि परमेश्वर ने झूठी शिक्षा देने वाले इज़ेबेल को ''मन फिराने के लिए अवसर'' दिया था (2:21)। हमारा परमेश्वर निरन्तर यह दिखाता है कि ''क्रोध में धीमा'' होने का क्या अर्थ है (याकूब 1:19)। हम अपने साथ धीरज करने के लिए प्रभु को महिमा दें! (रोमियों 2:4; 9:22; 1 तीमुथियुस 1:16; 1 पतरस 3:20; 2 पतरस 3:9, 15)।

तुरहियों पर पाठ में मैं इस बात पर बल दूंगा कि तुरहियां सावधान करने के लिए थीं। हमारे यहां लोगों को रेडियो और टेलीविज़न के द्वारा घोषणा करके सावधान किया जाता है। संसार के कुछ भागों में लोगों को घण्टियां बजाकर सावधान किया जाता है। अन्य क्षेत्रों में, ढिंढोरा पीटने वालों को गलियों और बाज़ारों में भेजकर लोगों को सावधान किया जाता है, जबकि यूहन्ना के दर्शन में सावधान करने का ढंग तुरहियां बजाना था।[11]

परमेश्वर लोगों को बार-बार जगाने की कोशिश करता है (8:7-12)

इस पाठ में हम पहली चार तुरहियों का अध्ययन करेंगे। बाकी तीन तुरहियों पर अगले पाठों में चर्चा की जाएगी।

पहली चार तुरहियां (पहली चार मुहरों की तरह) एक-दूसरे से जुड़ी हुई हैं: पहली चार तुरहियों ने लोगों के मनों को सीधे प्रभावित करने वाली अन्तिम तीन तुरहियों के विपरीत, केवल परोक्ष रूप से स्पर्श किया (देखें 9:3, 4)। इसके अलावा पहली चार तुरहियों ने प्राकृतिक संसार के केवल कुछ भाग को हानि पहुंचाई। उस समय लोग प्रकृति को पृथ्वी, समुद्र, स्वच्छ जल और आकाश चार श्रेणियों में बांटते थे।[12] पहली चार तुरहियां

बजाए जाने पर, इन चारों श्रेणियों पर असर हुआ।

पृथ्वी पर विनाशकारी शक्तियों के फैंके जाने के विवरणों को देखकर हमें मिस्र पर आने वाली दस विपत्तियों, विशेषकर पहली (पानी का लहू बन जाना), सातवीं (आकाश से ओलों और आग का गिरना), और नौवीं (देश पर अन्धकार) का स्मरण आता है (निर्गमन 7:20, 21; 9:23–25; 10:21–23)।[13] निश्चय ही यह संयोग नहीं है। परमेश्वर के लोगों और समाज में पहला बड़ा झगड़ा मिस्र हुआ में था, और मिस्र भलाई और बुराई के बीच तनाव का नमूना बन गया था। (देखें प्रकाशितवाक्य 11:8.)[14]

दस विपत्तियां भेजने के परमेश्वर के उद्देश्य और सात तुरहियों के उसके उद्देश्य में समानता बनाई जा सकती है: एक अर्थ में विपत्तियों से मिस्र को इस्राएलियों के साथ उनके दुर्व्यवहार का दण्ड दिया गया था, परन्तु उनका मूल उद्देश्य फिरौन को यह विश्वास दिलाना था कि वह इस्राएलियों को जाने दे। यूजीन पीटरसन ने लिखा है, ''निर्गमन वाली विपत्तियां दण्ड के लिए नहीं, बल्कि सुधार करने के लिए थीं, अर्थात उन्हें फिरौन को दयनीय बनाने के लिए ही नहीं, बल्कि उसका मन बदलने अर्थात मन फिराने के लिए भेजी गई थीं।''[15] तुरहियां पापियों को पश्चात्ताप करने के लिए उकसाने के लिए भी थीं।[16]

पहली तुरही: पृथ्वी पर विनाश (आयत 7)

आयत 7 बताती है कि पहली तुरही बजाए जाने पर क्या हुआ था:

> पहिले ने तुरही फूंकी, और लोहू से मिले हुए ओले और आग[17] उत्पन्न हुई, और पृथ्वी पर डाली गई; और पृथ्वी की एक तिहाई जल गई, और पेड़ों की एक तिहाई जल गई; और सब हरी घास भी जल गई (आयत 7)। (पहली तुरही बजाई जाती है, का चित्र देखें।)

हमें सातवीं विपत्ति का स्मरण आता है:

> तब ... यहोवा मेघ गरजाने और ओले बरसाने लगा, और आग पृथ्वी तक आती रही। इस प्रकार यहोवा ने मिस्र देश पर ओले बरसाए। जो ओले गिरते थे उनके साथ आग भी मिली हुई थी, ... इसलिए मिस्र भर के खेतों में क्या मनुष्य, क्या पशु, जितने थे सब ओलों से मारे गए और ओलों से खेत की सारी उपज नष्ट हो गई और मैदान के सब वृक्ष टूट गए (निर्गमन 9:23–25)।[18]

''जो ओले मिली हुई आग'' गरज से उत्पन्न हुई होगी।

निर्गमन वाली सातवीं विपत्ति और प्रकाशितवाक्य वाली पहली तुरही में बहुत कुछ मिलता-जुलता है। दोनों के दौरान पृथ्वी पर ओले और आग गिरी, वृक्षों, घास और अन्य वनस्पतियों का नाश हुआ। सातवीं विपत्ति से मिस्र की आर्थिकता प्रभावित हुई, जैसे पहली तुरही के समय भी हुआ था: प्रकाशितवाक्य 8 में बताए गए वृक्षों में निश्चय ही फलदार वृक्ष[19] भी होंगे। अनाज और अंगूरों जैसी फसलें जल गईं। हरी घास वाली धरती के विनाश

से अवश्य ही, दूध, मांस और ऊन की उपज प्रभावित हुई होगी।

परन्तु सातवीं विपत्ति और पहली तुरही में भिन्नताएं थीं। सातवीं तुरही बजने पर, पृथ्वी पर ओले और आग से कुछ अधिक गिरा था। यह ''लहू मिले हुए'' ओले और आग थे। टीकाओं में कई बार सहारा मरुस्थल की अच्छी रेत हवा में उड़कर वर्षा की बूंदों के साथ मिलकर ''लाल वर्षा'' के गिरने के अस्पष्ट ऐतिहासिक हवाले का उल्लेख होता है। उनमें सुझाव दिया जाता है कि इस घटना से प्रकाशितवाक्य 8:7 का रूपक प्रभावित हो सकता है। दक्षिण पश्चिमी ओक्लाहोमा में बड़े होने वाले लोगों को ''लाल वर्षा'' के बारे में प्राचीन इतिहास पर निर्भर रहने की आवश्यकता नहीं है। हमने लाल मिट्टी को बादलों के भंवर में उड़कर वर्षा के तूफ़ानों से टकराते देखा है। हमने लाल कीचड़ की वर्षा देखी है। जो बात हमने *नहीं* देखी, वह आकाश से *लहू* की वर्षा है। यूहन्ना ने लाल रेत की वर्षा नहीं देखी थी; न उसने आकाश से लाल कीचड़ गिरता देखा था; उसने तो आकाश से *लहू* गिरते देखा था। खुले में खड़े होने की कल्पना करें, बिजली चमक रही है, आपके आस-पास बर्फ के बड़े-बड़े गोले गिर रहे हैं, और आपके मुंह पर गर्म, चिपचिपा लहू रिस रहा है। परमेश्वर की प्रेरणा से रंगी गई डरावनी तस्वीर *यही* है।

सातवीं विपत्ति और पहली तुरही में मुख्य अन्तर यही है कि सातवीं विपत्ति के दौरान ''*मिस्र भर* के खेतों में क्या मनुष्य, क्या पशु, जितने थे *सब* ... मारे गए'' (निर्गमन 9:25क), जबकि पहली तुरही से पृथ्वी का केवल एक तिहाई भाग प्रभावित हुआ यानी केवल एक तिहाई वनस्पति जली।[20] याद रखें कि ये आंशिक न्याय है। ''ईश्वरीय क्रोध को करुणा की आशा से कम कर दिया गया [था]।''[21]

दूसरी तुरही: समुद्र में विनाश (आयतें 8, 9)

> और दूसरे स्वर्गदूत ने तुरही फूंकी, तो मानो आग सा जलता हुआ एक बड़ा पहाड़ समुद्र में डाला गया;[22] और समुद्र का एक तिहाई लोहू हो गया। और समुद्र की एक तिहाई सृजी हुई वस्तुएं जो सजीव थीं, मर गईं, और एक तिहाई जहाज़ नाश हो गए (आयतें 8, 9)। (पृष्ठ 25 पर दूसरी तुरही बजाए जाने का चित्र देखें।)

टीकाकार जलते पहाड़ के रूपक की ओर आकर्षित होते हैं। कुछ यह ध्यान देते हैं कि पुराने नियम में बाबुल के विनाश के लिए ऐसे ही रूपक का इस्तेमाल किया गया था (यिर्मयाह 51:24, 25)। कुछ लोगों का विचार है कि यह संकेत कुछ वर्ष पूर्व वेसुवियुस के फूटने से लिया गया, जिसमें पौम्पे दफ़न हो गया और नैपलिस की खाड़ी उजड़ गई;[23] जबकि दूसरों का मानना है कि यूहन्ना पतमुस के टापू के निकट सक्रिय ज्वालामुखियों से प्रभावित है।[24] परन्तु यूहन्ना ने यह नहीं कहा कि ''आग से जलता हुआ एक बड़ा पहाड़ समुद्र में फैंक दिया गया।'' उसने तो कहा कि ''एक बड़े पहाड़ *जैसा* कुछ'' देखा। बार्कले के अनुवाद में ''जिसे मैं आग से जलता हुआ एक बड़ा पहाड़ ही *कह* सकता हूं।''[25]

पक्का नहीं कहा जा सकता कि यूहन्ना ने क्या देखा, परन्तु इससे कोई फर्क नहीं

पड़ता। ''एक बड़े पहाड़ जैसा कुछ'' नाटकीय प्रभाव के लिए आत्मा द्वारा इस्तेमाल किया गया कोई विशाल आधार ही था।[26]

महत्व ''पहाड़'' का नहीं है, बल्कि समुद्र पर पड़ने वाले प्रभाव का है:[27] ''समुद्र का एक तिहाई लहू हो गया, और समुद्र के एक तिहाई प्राणी मर गए, और एक तिहाई जहाज़ नष्ट हो गए।'' पहली विपत्ति का ध्यान आता है: ''तब मूसा ... ने लाठी को उठाकर ... नील नदी के जल पर मारा, और नदी का सब जल लोहू बन गया और नील नदी में जो मछलियां थीं, वे मर गईं; ...'' (निर्गमन 7:20, 21)।

नये नियम के समय में लोग अपनी जीविका के लिए समुद्र पर अधिक निर्भर थे। अधिकतर लोग समुद्र के निकट ही रहते थे। वाणिज्य के लिए देश समुद्र पर निर्भर थे। मछली उद्योग भोजन का मुख्य स्रोत था। एक तिहाई जहाज़ों के अचानक डूब जाने और एक तिहाई मछलियों के मर जाने से पूरा संसार प्रभावित होना था। आज हम पहली शताब्दी के लोगों की तरह समुद्र पर उतना निर्भर नहीं हैं, परन्तु एक तिहाई जहाज़ों के नष्ट हो जाने,[28] और एक तिहाई जल जन्तुओं के मर जाने से आज भी अनर्थ हो जाएगा।[29]

बाद में जब हम कटोरों के बहाए जाने को देखेंगे तो एक स्वर्गदूत यह घोषणा करेगा कि जल को लहू में बदलना उन लोगों का सही न्याय था जिन्होंने ''पवित्र लोगों, और भविष्यवक्ताओं का लोहू बहाया था'' (16:6क)। ''मनुष्य जो कुछ बोता है, वही काटेगा'' (गलातियों 6:7ख)।

तीसरी तुरही: पृथ्वी के जल का विनाश (आयतें 10, 11)

दूसरी तुरही से *समुद्री* पानी प्रभावित हुआ था, जबकि तीसरी तुरही से *पृथ्वी* के जल स्रोत प्रभावित हुए:

> और तीसरे स्वर्गदूत ने तुरही फूंकी, और एक बड़ा तारा जो मशाल की नाईं जलता था, स्वर्ग से टूटा,[30] और नदियों के एक तिहाई पर, और पानी के सोतों पर आ पड़ा। और उस तारे का नाम नागदौना कहलाता है, और एक तिहाई पानी नागदौना सा कड़वा हो गया, और बहुतेरे मनुष्य उस पानी के कड़वे हो जाने से मर गए[31] (आयतें 10, 11)। (पृष्ठ 26 पर तीसरी तुरही बजाई जाती है, वाला चित्र देखें)

एक बार फिर ''बड़ा तारा'' के अर्थ की तरह टीकाकारों को ''छोटों में बड़े'' की बात समझ नहीं आती: एक तो यह ध्यान दिलाता है कि बाबुल के राजा के गिरने के सम्बन्ध में पुराने नियम में ऐसी ही शब्दावली का इस्तेमाल किया गया था (यशायाह 14:4, 12[32])। एक ओर यह सुझाव देता है कि प्रकाशितवाक्य में *आत्मिक* बाबुल का राजा[33] डोमिशियन है, इसलिए वह बड़ा तारा सम्राट को ही कहा गया है। एक और भी है जो तारे का अर्थ हाल ही के इतिहास में किसी बड़े व्यक्ति को बताता है।[34] फिर एक ज़ोर देता है कि अगले अध्याय में भी इसी तारे का उल्लेख है, इसलिए यह शैतान को ही कहा गया है।[35] परन्तु

फिर यह तारा मूलत: एक मंच का आधार है; बल इस बात पर है कि तारे ने पीने योग्य पानी के स्रोतों को कैसे प्रभावित किया: ''और उस तारे का नाम नागदौना कहलाता है और एक तिहाई पानी नागदौना सा कड़वा हो गया, और बहुतेरे मनुष्य उस पानी के कड़वे हो जाने से मर गए।''[36]

कितना अशुभ लगने वाला शब्द है: ''नागदौना''! यह दीमक से छलनी गली हुई लकड़ी की आकृति को दर्शाता है। वास्तव में नागदौने का कीड़े या लकड़ी से कुछ सम्बन्ध नहीं है। इसके बजाय यह अवर्णित लगने वाला पौधा है। जब मैं और मेरी पत्नी कैंटकी के सेकर नामक गांव में गए तो हमें जड़ी बूटियों वाली एक छोटी वाटिका मिली, जिसमें भोजन को स्वादिष्ट बनाने वाले पौधे थे। उनके ऊपर पौधों की कई किस्मों के नाम लिखे गए थे: उनके में से एक पर ''नागदौना'' भी लिखा था। तीसरी तुरही बजाई जाती है।

''नागदौना'' *Artemisia absinthium* के रूप में जानी जाने वाली पौधों की श्रेणी का एक सामान्य नाम है,[37] जो कड़वे स्वाद के लिए प्रसिद्ध है। पलिश्तीन में इसकी कई किस्में उगती थीं। परमेश्वर की प्रेरणा पाए हुए लेखकों द्वारा इस पौधे का इस्तेमाल आज्ञा न मानने के कड़वे फल को बताने के लिए किया गया (व्यवस्थाविवरण 29:17, 18; नीतिवचन 5:4; यिर्मयाह 9:14, 15; 23:15; विलापगीत 3:15, 19; आमोस 5:7; 6:12)।

नागदौने का पौधा ज़हरीला नहीं है, परन्तु यूहन्ना के दर्शन में इसने न केवल पानी को पीने के अयोग्य कर दिया, बल्कि घातक भी कर दिया। इसलिए SEB में आयत 11 का अनुवाद, ''उस तारे का नाम कड़वाहट है, क्योंकि इसने एक तिहाई पानी को कड़वा कर दिया। कई लोग इसे पीने से मर गए; क्योंकि यह ज़हर था।''[38]

दूषित पानी पीकर लोग अधिक देर तक जीवित नहीं रह सकते। पृथ्वी के ताज़ा पानी के स्रोत का एक तिहाई नाश हो जाना विनाशकारी होगा। इसके प्रभाव को समझने के लिए, जल-प्रलय तथा अन्य आपदाओं वाले उन क्षेत्रों पर विचार करें, जहां पानी दूषित हो जाता है। पानी दूषित होने पर सरकारी और गैर सरकारी एजेंसियां प्रभावित लोगों तक पीने योग्य पानी पहुंचाने का यत्न करती हैं। पानी न पहुंचाए जाने पर पूरे इलाके में बीमारी और महामारी फैल जाएगी। अब एक तिहाई संसार के ऐसे खतरनाक क्षेत्रों से भरे होने का विचार करें! ऐसी सम्भावना का विचार भी हमारी कल्पना को झिंजोड़ देता है।

परीक्षा तो हमारी नदियों, नालों और जल के अन्य स्रोतों के व्यापक प्रदूषण को रोकने और उसकी निंदा करने की है, और हो सकता है कि ऐसा हो भी जाए,[39] परन्तु यहां पर पानी के दूषित होने की बात पर विचार करने से कहीं अधिक दूर तक असर करने वाला सबक है: इसकी प्रासंगिकता यह है कि पाप जिसे भी छुए, उसे दूषित कर देता है।

चौथी तुरही: आकाश में विनाश (आयत 12)

चौथी तुरही ने प्राचीन, आकाशीय वस्तुओं द्वारा इस्तेमाल किए जाने वाली अन्तिम श्रेणी को प्रभावित किया:

> और चौथे स्वर्गदूत ने तुरही फूंकी, और सूर्य की एक तिहाई, और चांद की एक तिहाई और तारों की एक तिहाई पर आपत्ति आई, यहां तक कि उनका एक तिहाई अंग अन्धेरा हो गया और दिन की एक तिहाई में उजाला न रहा और वैसे ही रात में भी (आयत 12)। (चौथी तुरही बजाई जाती है वाला चित्र देखें)

कुछ हद तक, इस तुरही में चौथी विपत्ति वाली बात ही थी, जिसमें ''मूसा ने अपना हाथ आकाश की ओर बढ़ाया, और सारे मिस्र देश में तीन दिन तक घोर अन्धकार छाया रहा'' था (निर्गमन 10:22)।

इन दृश्यों को पूरे संसार के विनाश के लिए लेने का प्रयास करने वालों को चौथी तुरही के साथ एक समस्या है:[40] यदि सूरज, चांद और तारों का एक तिहाई भाग मर जाए तो उनका प्रकाश एक तिहाई कम हो जाएगा, परन्तु इसके बावजूद हमें बारह घण्टे के लगभग प्रकाश (कम प्रकाश, फिर भी प्रकाश रहेगा) के बाद बारह घण्टे का अंधेरा (कम अंधेरा, परन्तु पूरा अंधेरा नहीं) मिलेगा। इसके विपरीत यूहन्ना के दर्शन में आकाशीय पिंडों पर विपत्ति आने के कारण दिन और रात दोनों के समय में बड़ी रुकावट आई, जिस कारण प्रकाश नहीं रहा था।

यूहन्ना को ऐसे स्पष्ट विरोधाभासों ने चिंतित नहीं किया, और न ही हमें चिंतित होना चाहिए।[41] यह प्रेरित ''विवरणों को मिलाए बिना संकेतों के ढेर लगाते हुए अपेक्षित परिणाम पाने के लिए संतुष्ट'' था[42] लक्ष्य पर लियोन मौरिस की टिप्पणी है: ''... इस भयानक, भावपूर्ण और कवि के मन को वैज्ञानिक पंडिताई के गद्य के रूप में मानकर पढ़ना बहुत बड़ी गलती है। वह एक बहुत बड़ी तस्वीर बना रहा है और यदि तुरन्त उसकी कोई छोटी सी बात उस बड़ी तस्वीर के साथ मेल नहीं खाती तो घबराने वाली बात नहीं है।...''[43]

कहने का आशय यह है कि *सारी सृष्टि* प्रभावित हुई थी। सूर्य जीवन का और पृथ्वी ऊर्जा का हमारा मुख्य स्रोत है। सूर्य के उत्साह में कोई भी बड़ी बढ़ोतरी या घटाव जीवन का बहुत बड़ा नाश कर सकता है। परमेश्वर इस सांकेतिक चित्रण का इस्तेमाल पाप की गम्भीरता और पापियों को पश्चात्ताप के लिए आमंत्रित करने के लिए करता है।

प्राकृतिक आपदा के द्वारा परमेश्वर लोगों को सावधान करता है

टीकाकार पहली चार तुरहियों के संकेत में गहरे अर्थ ढूंढ़ने का प्रयास करते हैं। उनमें से कुछ के निष्कर्ष तो सही हो सकते हैं[44] परन्तु पहली चार तुरहियों को पृथ्वी, समुद्र, पृथ्वी के जल और वातावरण से सम्बन्धित प्राकृतिक आपदाओं के रूप में विचार करना आसान हो सकता है। इन विपत्तियों में जंगल की आग, रेतीले तूफ़ान, प्रचण्ड आंधियां, प्रलय, बर्फबारी और बर्फीले तूफ़ान, भीषण आंधियां, मिट्टी का खिसकना, भूकम्प और विस्फोटक ज्वालामुखी शामिल हैं।

उस विचार के साथ जिस पर हम ज़ोर दे रहे हैं कि तुरहियों का मुख्य कारण लोगों को चेतावनी देना था, इन विपत्तियों पर विचार करने से हम चौंकाने वाले निष्कर्ष पर पहुंचते हैं

कि परमेश्वर लोगों को मन फिराव के लिए लाने की कोशिश में प्राकृतिक आपदाओं का इस्तेमाल करता है।

मुझे पिछली सर्दियों की शनिवार की उस रात का स्मरण है, जब पहली बार तापमान शून्य से नीचे चला गया था। रविवार सुबह जब लोग आराधना के लिए इकट्ठा हुए तो चर्चा का मुख्य विषय मौसम ही था, जबकि हम अपने हाथ सेंकते हुए, नाक मल रहे थे और गिरे हुए टनों पत्तों पर शिकायत कर रहे थे। हम में से अधिकतर लोग मौसम की बात करते हैं। हम मौसम पर शिकायत करते हैं। कुछ लोग इसकी भविष्यवाणी करने की कोशिश करते हैं। हम में से अधिकतर लोग, जो नहीं कर पाते वह मौसम से *सबक* लेना है।

वचन के हमारे भाग में इस बात की घोषणा है कि जब मौसम खराब होता है, तो परमेश्वर उसमें से हमें कुछ *सिखाना* चाह रहा होता है।[45] उदाहरण के लिए, वह चाहता है कि हम पाप के दूरगामी परिणामों को समझ जाएं। जब आदम ने पाप किया तो परमेश्वर ने उसे बताया था, ''इसलिए भूमि तेरे कारण शापित है'' (उत्पत्ति 3:17ख)। वह शाप आज भी है। इस अध्ययन में प्रकृति की जिन श्रेणियों की बात की गई है, वे घोषणा करती हैं कि हमारे नीचे की पृथ्वी, हमारे ऊपर का आकाश और हमारे आस-पास की वस्तुएं पाप से दूषित हो चुकी हैं। हेली ने लिखा है, ''परमेश्वर ने मनुष्य के लाभ और इस्तेमाल के लिए अच्छी पृथ्वी बनाई थी, और इसमें से उसका जीवन बना रहता है। परन्तु मनुष्य ने पृथ्वी का दुरुपयोग किया है। अब यह पाप से प्रभावित हुई है; यह कुछ तो बेकार हो गई है और कुछ उसकी शत्रु बन गई है।''[46] जैसा कि आप में से कुछ लोग इस बात की गवाही दे सकते हैं कि प्रकृति हमेशा जीवन की रक्षक नहीं रही है; कई बार यह जीवन की नाशक भी हो जाती है। पाप जिसे भी स्पर्श करता है, उस पर विपरीत असर डालता है।

इसके अतिरिक्त परमेश्वर हमें याद दिलाता है कि यह संसार हमारा घर नहीं है। चमकते सूरज, नीले आकाश, महकती हवा, और गाते पक्षियों को देखकर हमारी इस ग्रह पर सदा के लिए रहने की इच्छा हो सकती है। फिर आकाश अंधेरा हो जाता है, तेज़ हवाएं आंधी बन जाती हैं और हवा में कूड़ा और टूटी हुई चीज़ें उड़ती हैं और हमें ध्यान आता है कि हम तो केवल ''पृथ्वी पर परदेशी और बाहरी हैं'' (इब्रानियों 11:13)। ऐसे समय में हम पुराने गीत ''यह दुनिया मेरा घर नहीं (मैं तो एक मुसाफिर हूं)'' के शब्द बड़ी समझ से गाने लगते हैं।[47] तब हमारे मन में फिर ''प्रभु के साथ रहने'' (2 कुरिन्थियों 5:8) की इच्छा होती है।

सबसे बढ़कर परमेश्वर हमें सिखाना चाहता है कि हमारा आश्रय केवल वही है। कई बार लोगों को लगता है कि जीवन उनके हाथ में है, परन्तु विपत्ति आने पर उन्हें सच्चाई का पता चलता है कि उनके हाथ में कुछ *नहीं* है। वचन का हमारा भाग और आज की सुर्खियां दोनों इस बात की घोषणा करती हैं कि पृथ्वी, समुद्र पर या हवा में कोई सुरक्षा नहीं है; इसलिए आवश्यक है कि हम उसके पास चले जाएं जो ''हमारा शरण स्थान और बल है, संकट में अति सहज से मिलने वाला सहायक'' (भजन संहिता 46:1)।

समाचार पत्रों की सुर्खियों में प्राकृतिक आपदाओं के बारे बताया जाता है; समाचार

पत्रिकाएं उनके विवरण देती हैं; टेलीविज़न पर हम उन्हें आंखों से देखकर उनके बाद की महामारी को देख सकते हैं। परन्तु इनमें से कोई भी हमें नहीं बताती कि *परमेश्वर* ने इन्हें हमारा ध्यान खींचने के लिए आने दिया है।

मुझे गलत न समझें। रोमियों 2:4 इस बात की घोषणा करता है कि ''परमेश्वर की कृपा तुझे मन फिराव को सिखाती है।'' परमेश्वर ने हज़ारों तरह से अपने प्रेम को दिखाया है, जिनमें सबसे बड़ा अपने पुत्र को भेजकर (यूहन्ना 3:16) है और वह इस बात को प्राथमिकता देता है कि लोग प्रेम की इन अभिव्यक्तियों को मानें। परन्तु जब लोग प्रेम की उसकी अभिव्यक्तियों को अनदेखा करते हैं तो परमेश्वर चुप नहीं बैठता। जब कोई और ढंग काम न आए तो वह लोगों को उनकी आत्मिक उदासीनता से जगाने के लिए कष्ट भेजता है।

परमेश्वर वही करने की कोशिश कर रहा है, जो हम में से अधिकतर माता-पिता करने का प्रयास करते हैं: सही काम करने के लिए अपने बच्चों को प्रभावित करने का हर तरीका अपनाकर हम उनके लिए अपना प्रेम दिखाते हैं और फिर आशा करते हैं कि इससे वे सीधे रास्ते पर चलते रहेंगे। कई बार ऐसा नहीं होता, जिस कारण हम अपने बच्चों को गलत काम के परिणाम की चेतावनी देते हैं, वैसे ही जैसे परमेश्वर हमें अपने वचन में चेतावनी देता है। कभी-कभी यह भी काफ़ी नहीं होता। तब हमें अपने बच्चों को डांटना पड़ता है, इसलिए नहीं कि हम उनसे घृणा करते हैं, बल्कि इसलिए क्योंकि हम उनसे प्रेम करते हैं और चाहते हैं कि वे ज़िम्मेदार नागरिक और विश्वासी मसीही बनें। इसी तरह, ''प्रभु, जिससे प्रेम करता है, उसकी ताड़ना भी करता है'' (इब्रानियों 12:6क)। मुझे माइकल विल्कोक की टिप्पणी अच्छी लगती है: ''यह कभी नहीं कहना चाहिए कि मनुष्यों को होश में लाने के लिए किसी समय सम्पूर्ण पृथ्वी का विनाश करके भी परमेश्वर ने अपनी पूरी सामर्थ से काम नहीं किया है।''[48]

क्या विनाश से वह असर होता है, जो परमेश्वर चाहता है? कभी-कभी। लड़कपन में मैंने ओक्लाहोमा के लोन वोल्फ नगर की ओर प्रचण्ड आंधी आते देखी। यह सीधी स्कूल की इमारत की ओर बढ़ रही थी, जो नगर के किनारे के निकट थी। आंधी के वहां तक पहुंचते-पहुंचते बच्चे सुरक्षित जगहों पर पहुंच गए थे, शिक्षकों ने उन्हें डेस्कों के नीचे बिठा दिया था। अन्तिम क्षण में, यह आंधी मुड़कर नगर के ऊपर से चली गई। बाद में एक छोटी लड़की ने मेरी मां (जो एक टीचर थी) को बताया, ''मैंने पहली बार आज प्रार्थना की है।'' मुझे लगता है कि उस दिन नई-नई कई आवाज़ों से प्रभु के कान फटने लगे होंगे।

प्रचार करने का पैंतालीस साल का मेरा अनुभव है कि जब विपत्ति आती है तो कई लोग परमेश्वर को याद करते हैं, जिन्होंने सब कुछ ठीक होने पर कभी उसके बारे में सोचा तक नहीं होता। ओक्लाहोमा राज्य की मिडवेस्ट सिटी में हमारी चर्च बिल्डिंग जलने से मैंने अपनी सेवकाई के दौरान पहली बार इतनी दिलचस्पी और जोश उफ़ान पर देखा था। मानवता का यह कार्य विशेष रूप से सराहनीय है, परन्तु यह सच्चा है और प्रभु इसे मान्यता देता है।

तुरहियों के तुरन्त बाद का संदेश था कि परमेश्वर रोम को जगाने की कोशिश कर रहा था और उस दुष्ट साम्राज्य के लोगों को मन फिराने के लिए कह रहा था, परन्तु इसकी कलीसिया के बाहर हों या अन्दर, प्रासंगिकता हर युग के पापियों के लिए बनाई जा सकती है।

बिली संडे धर्म-जागरण के प्रसिद्ध प्रचारक थे। किसी नये नगर में जाने की तैयारी करते हुए उन्होंने एक प्रसिद्ध राजनैतिक अगुवे को लिखा और उससे उन लोगों की सूची मांगी, जिन्हें आत्मिक सहायता की आवश्यकता थी। न्यू यॉर्क सिटी के मेयर से ऐसी एक सूची मांगने पर, मेयर ने उन्हें न्यू यॉर्क सिटी की फोन डायरेक्टरी भेज दी। यदि यह सूची उन लोगों की हो जिन्हें प्रभु की ओर से जगाने के लिए अलार्म की आवश्यकता होती है तो इसमें हम सब का नाम हो सकता है।

तुरहियों में आपके और मेरे लिए एक शिक्षा है। जब कष्ट हमें घुटनों पर ले आए, तो मैं वास्तव में वहां होता हूं, जहां परमेश्वर चाहता है कि मुझे होना चाहिए। अर्थात मैं उसके आगे दुहाई देने की सही अवस्था में होता हूं, ''हे परमेश्वर, मुझ पापी पर दया कर'' (लूका 18:13ख; KJV)।

सारांश (8:13)

पहली चार तुरहियों के बजने की गवाही के बाद यूहन्ना ने ''एक उकाब[49] को उड़ते और ऊंचे शब्द से यह कहते सुना कि उन तीन स्वर्गदूतों की तुरही के शब्दों के कारण जिन का फूंकना अभी बाकी है, पृथ्वी के रहने वालों[50] पर हाय! हाय! हाय![51]'' (आयत 13ख)। तीन ''हाय'' अन्तिम तीन तुरहियों का संकेत हैं (देखें 9:12; 11:14)। पहली चार तुरहियां तो विनाशकारी थीं ही, परन्तु इससे भी अधिक विनाश आने वाला था!

सात तुरहियों का हमारा अध्ययन हमारे अगले पाठ में जारी रहेगा, परन्तु अभी के लिए मैं आपको इसे व्यक्तिगत प्रासंगिकता बनाने के लिए कहूंगा। क्या हाल ही में प्रभु ने तुरही बजाकर आपको जगाने की कोशिश की है? यदि उसने की है, तो मेरी प्रार्थना है कि आप कानों में उंगलियां डालकर उसकी पुकार को अनसुनी न करें![52] यदि आपने मन फिराकर बपतिस्मा नहीं लिया है (प्रेरितों 2:38), तो अभी ले लें। यदि आप ने मन फिराकर प्रार्थना नहीं की है (प्रेरितों 8:22), तो अभी समय है। सरदीस की कलीसिया के नाम उसकी इस चेतावनी को याद रखें:

> जागृत हो, और उन वस्तुओं को जो बाकी रह गई हैं और मिटने को हैं, दृढ़ कर; ... यदि तू जागृत न रहेगा तो मैं चोर के समान आ जाऊंगा, और तू कदापि न जान सकेगा कि मैं किस घड़ी तुझ पर आ पड़ूंगा (3:2, 3; रोमियों 13:11 भी देखें; इफिसियों 5:14; 1 थिस्सलुनीकियों 5:6)।

सिखाने वालों तथा प्रचारकों के लिए नोट्स

पृष्ठ 18 पर तुरहियों को बताता संक्षेप में चार्ट है। पहले स्तम्भ में पहली तुरहियों का

तुरहियां चौकस करने के लिए हैं!

पहली छह तुरहियां	*पाप* का परिणाम	*रोम* को चेतावनी	*सब* पापियों को चेतावनी
पहली से चौथी। भूमि, समुद्र, नदियों और संसार में विपत्तियां	संसार पर पाप का परिणाम (समस्त संसार किल्टर से बाहर)	प्राकृतिक आपदाएं	यह संसार हमारा घर नहीं है!
पांचवीं। टिड्डियां जो सताती हैं, परन्तु घात नहीं करतीं	व्यक्ति पर पाप का प्रभाव (आत्मिक और नैतिक गिरावट)	भीतरी पतन	पापी का मार्ग कठिन है!
छठी। नष्ट करने वाले स्वर्गदूत/सेना	दूसरों पर पाप का प्रभाव (जैसा कि युद्ध के अत्याचारों से पता चलता है)	बाहरी आक्रमण	पाप के प्रभाव भयंकर और दूरगामी हैं!

सातवीं (अन्तिम) तुरही बजने पर बहुत देर हो जाएगी! **मन अभी** फिरा लें!

[illegible] ''मन न फिराने वाले मनुष्य जाति की [illegible]

[illegible] सामान्य प्रासंगिकता [illegible]

टिप्पणियां

[1]''फूंकने को तैयार हुए'' का अर्थ सम्भवतया इतना ही है कि स्वर्गदूतों ने अपने होठों से तुरहियां लगा लीं। यह नाटक और सस्पेंस में जोड़ने के लिए केवल विवरण है। [2]दो मुख्य हवाले हनोक 20:7 और तोबीत 12:15 हैं। इनमें महादूतों के नाम दिए गए हैं। सात में से, पवित्र शास्त्र में केवल मिकाइल और जिब्राइल का ही उल्लेख है (दानिय्येल 8:16; 9:21; 10:13, 21; 12:1; लूका 1:26; यहूदा 9; प्रकाशितवाक्य 12:7)। हनोक और तोबीत जैसी किताबें परमेश्वर की प्रेरणा रहित परम्परा हैं, प्रभु का प्रकाशन नहीं। [3]परमेश्वर ''के सामने'' के सम्बन्ध में देखें 1:4; 4:5, 10; 5:8; 7:9, 11, 15; 11:4, 16; 14:3; 15:4. [4]कई लोग तुरही को नरसिंगे से जोड़ते हैं, जो किसी महत्वपूर्ण घटना या महत्वपूर्ण व्यक्ति की घोषणा के लिए बजता था। तुरही का संकेत मसीही आराधना में तुरही को वैसे ही उचित नहीं ठहराता जैसे धूप का संकेत मसीही अराधना में धूप के इस्तेमाल को सही नहीं ठहराता। (*ट्रुथ फ़ॉर टुडे* की पुस्तक ''प्रकाशितवाक्य, 2'' में 5:8 पर और 8:3, 4 पर नोट्स देखें।) [5]प्रकाशितवाक्य 8 से 11 अध्याय में, बेशक ज़ोर परमेश्वर के लोगों को शारीरिक खतरे से नहीं, बल्कि आत्मिक खतरे से चौकस करने पर है। [6]इस तथ्य की पृष्ठभूमि के रूप में कि तुरहियां चौकस करने के लिए होती थीं, आपको चाहिए कि 3:10 पर विचार करें जो ''परीक्षा के उस समय'' की बात है, जो ''सारे संसार पर आने वाली है।'' इस परख का एक उद्देश्य ''पृथ्वी पर रहने वालों [अर्थात अविश्वासियों] की परख [या परीक्षा] थी।'' *ट्रुथ फ़ॉर टुडे* की पुस्तक ''प्रकाशितवाक्य, 2'' में 3:10 पर नोट्स देखें। [7]*ट्रुथ फ़ॉर टुडे* की पुस्तक ''प्रकाशितवाक्य, 1'' में संख्याओं पर नोट्स देखें। [8]होमेर हेली, *रैवलेशन* (ग्रैंड रैपिडस, मिशिगन: बेकर बुक हाउस, 1979), 219 जब मुहरें खुल रही थीं तो पीले घोड़े के सवार को ''पृथ्वी की एक चौथाई पर'' मृत्यु की अनुमति दे दी गई थी (6:8): *एक तिहाई एक चौथाई* पर बढ़ोतरी है। [9]जॉर्ज एल्डन लैड, *ए कमैंट्री आन द रैवलेशन ऑफ जॉन* (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन : विलियम बी. ईर्डमैंस कं , 1972), 124[10]जी.बी. केयर्ड *ए कमैंट्री ऑन द रैवलेशन ऑफ़ सेंट जॉन द डिवाइन* (लंदन: ऐडम एण्ड चार्ल्स ब्लैक, 1966), 112.

[11]यहां पर आप ''तुरहियां चौकस करने के लिए हैं'' चार्ट का परिचय दे सकते हैं। (इस पाठ में चार्ट और सिखाने वालों तथा प्रचारकों के लिए नोट्स देखें।) [12]देखें रेअ समर्स, वर्दी इज द लैंब (नैशविल्ले : ब्रॉडमैन प्रैस, 1951), 155 [13]इनके अतिरिक्त, पांचवीं तुरही हमें टिड्डियों की आफत का स्मरण कराएगी। (निर्गमन 10:1–20)। परन्तु चौकस रहें कि प्रकाशितवाक्य केवल दस आफतों की नकल नहीं है। इनमें से केवल कुछ

ही का इस्तेमाल हुआ है और उनको अलग तरह से लिया गया है। इस प्रकार यह जानने के लिए ''घुमाव'' मिलता है कि उन आफतों से कुछ सामान्य निष्कर्ष तो निकाले जा सकते हैं, परन्तु प्रकाशितवाक्य के संकेत विलक्षण हैं। [14]*ट्रुथ फार टुडे* की पुस्तक ''प्रकाशितवाक्य'' में ''कब तक, हे प्रभु'' पाठ देखें। [15]यूजीन एच. पीटरसन, *रिवर्सड थंडर* (सैन फ्रैंसिस्को: हार्पर कोलिन्स पब्लिशर्स, 1988), 98. [16]निश्चय ही, फिरौन ने मन नहीं फिराया। यूहन्ना के समय के अधिकतर पापियों ने मन नहीं फिराया और अधिकतर पापी आज भी मन नहीं फिराएंगे, परन्तु इस पर बाद में ज़ोर दिया जाएगा। [17]ईश्वरीय न्याय के रूप में ओले और आग का संकेत पूरे पुराने नियम में मिलता है (उदाहरण के लिए, देखें अय्यूब 38:22, 23; यशायाह 28:2, 17; 30:30, 31) [18]इस्राएलियों को ओलों के प्रभाव से छूट थी (निर्ग 9:26), उसी प्रकार मसीही लोगों को तुरहियों के प्रभाव से छूट थी। [19]''वृक्ष'' के लिए यूनानी शब्द आमतौर पर फल के पेड़ों के लिए हुआ है (देखें मत्ती 7:17 और यहूदा 12)। [20]कुछ लोग इस बात से परेशान होते हैं कि 8:7 कहता है कि ''सब हरी घास भी जल गई,'' परन्तु फिर 9:4 में टिड्डियों से कहा गया कि ''न पृथ्वी की घास को, न किसी हरियाली को न पेड़ को हानि पहुंचाएं।'' याद रखें कि रूपक में एकरूपता मुख्य लक्ष्य नहीं है। कोई बेमेलपन नहीं है। हमारे लिए शायद यह समझना आवश्यक है कि *पृथ्वी के एक तिहाई भाग में प्रभावित हुई* ''सब हरी घास जल गई।'' तुरहियों पर पहले पाठ का वैकल्पिक शीर्षक ''जब प्रकृति नाकाम हो जाए'' है। (यदि आपको और अनोखा शीर्षक पसन्द है, तो ''जब प्रकृति उठ कर हमें काटती है'' रख सकते हैं।) एक और शीर्षक ''परमेश्वर की तुरहियां'' हो सकता है, जिसका इस्तेमाल सातों तुरहियों पर पाठ के लिए हो सकता है। सभी तुरहियों को शामिल करने वाले और शीर्षक हैं ''पृथ्वी पर आग'' (हेरोल्ड हेज़लिप) और ''पश्चाताप न करने वाली मनुष्य जाति की त्रासदी'' (एडवर्ड मेक्डोवल)। इस पाठ से मेल खाते हुए आप चाहें तो इस पुस्तक में "परमेश्वर द्वारा प्राकृतिक आपदाओं के इस्तेमाल पर प्रश्न" लेख पर चर्चा कर सकते हैं।

[21]रूबल शैली, *द लैम्ब एण्ड हिज़ एनिमीज़: अंडरस्टैंडिंग द बुक ऑफ़ रैवलेशन* (नैशविल्ले: ट्वंटियथ सैंचुरी क्रिश्चियन फाउंडेशन, 1983), 59. [22]शायद यह भूमध्य सागर की बात है। [23]यह विस्फोट 79 ई. में हुआ। यदि प्रकाशितवाक्य की पुस्तक 95-97 के आस पास लिखी गई है, तो यह विस्फोट अधिक हुए थे। इस विस्फोट के सचित्र विवरण के लिए, देखें समर्स, 156. [24]थे या एक सक्रिय ज्वालामुखी था जो यूहन्ना ने देखा होगा। पहाड़ के फूटने और ''समुद्र में फैंके'' जाने पर क्या हो सकता है, के स्पष्ट विवरण के लिए देखें, बर्टन कॉफमैन, *कमैंट्री ऑन रैवलेशन* (ऑस्टिन, टैक्सस: फर्म फांउडेशन हाउस, 1979), 187. [25]विलियम बार्कले, द *रैवलेशन ऑफ़ जॉन,* अंक 2, संशो. संस्क. द डेली स्टडी बाइबल सीरीज (फिलाडेल्फिया: वैस्टमिंस्टर प्रैस, 1976), 43. [26]नाटक के प्रदर्शनों में, मंच सज्जा के भाग या नायकों द्वारा इस्तेमाल की जाने वाली किसी भी चीज़ को च्ड्डु श्वह्मश्वज्ज (या आधार) (''प्रापर्टी'' का संक्षिप्त रूप) कहा जाता है। [27]तीसरा कटोरा उण्डेले जाने पर, हम समुद्र के पानी को फिर लहू में बदलते देखेंगे, परन्तु वहां पहाड़ का उल्लेख नहीं होगा (16:3)। मुख्य विवरण पहाड़ नहीं, बल्कि समुद्र के पानी का लहू बन पाना है। [28]1 जनवरी 1981 तक, समुद्र में जाने वाली लगभग 25,000 नदियां पंजीकृत थीं। एक ही समय में 8,000 से अधिक जहाजों के डूब जाने की कल्पना करें। [29]समुद्र ने पृथ्वी का लगभग तीन-चौथाई भाग घेरा हुआ है। उस क्षेत्र का एक तिहाई पृथ्वी के कुल भू-क्षेत्र जितना होगा। यदि इतने इलाके पर दुष्प्रभाव पड़े तो यह सचमुच बहुत बड़ी विपत्ति होगी। [30]कुछ लोग यह चिन्ता करते हैं कि यहां और 9:1 में आकाश से एक तारा गिरता है, जब 6:13 में पहले कहा गया था कि सारे तारे पृथ्वी पर गिर गए। ये बातें याद रखें: (1) यह संकेत है, वास्तविकता नहीं। (वास्तविक तारा पृथ्वी पर नहीं गिर सकता, क्योंकि तारे पृथ्वी से बड़े हैं।) (2) मेल खाने का महत्व पुस्तक में ही है। (3) हर भाग थोड़ा बहुत ''आरम्भ हो जाता है,'' सो पिछले एक भाग में पृथ्वी पर तारे गिरने की बात का आवश्यक नहीं कि इस भाग से कोई सम्बन्ध हो।

[31]मनुष्यों की मृत्यु का यह पहला स्पष्ट उल्लेख है, यद्यपि हम यह मान सकते हैं कि लोग तब मरे होंगे जब एक तिहाई वनस्पति नष्ट हो गई थी (पहली तुरही) और जब एक तिहाई नष्ट हो गए थे (दूसरी तुरही), तौ भी जैसा पहले ध्यान दिया गया था, पहली चार तुरहियों से लोगों पर प्रत्यक्ष नहीं, बल्कि परोक्ष रूप से प्रभाव पड़ा। आयत 11 यह नहीं कहती कि ''एक तिहाई'' मनुष्य मर गए, बल्कि यह कहती है कि ''बहुत

से मनुष्य मर गए।'' यह बात कि लोग मर गए, यहां कही गई बात से मेल खाती प्रतीत होती है। [32]यशायाह 14:12 में KJV में ''लूसिफर'' है। यह शब्द शैतान के लिए नहीं, बल्कि बाबुल के राजा के लिए हैं। शैतान के लिए ''लूसिफर'' बाइबल का शब्द नहीं है। [33]अध्याय 17 और 18 में रोम को बाबुल कहा गया है (विशेषकर देखें 17:9, 18)। [34]सतत ऐतिहासिक विचार को मानने वाले लोग तारे को कालांतर के एक ऐतिहासिक पात्र के रूप में मानते हैं, जबकि बहुत से प्रीमिलेनियलिस्टों का मानना है कि यह खतरनाक व्यक्तिगत, ऐतिहासिक ''मसीह विरोधी'' है। (इस पुस्तक में आगे '''मसीह विरोधी' और प्रकाशितवाक्य'' पाठ देखें।) [35]सी.एस. लूइस ने अपनी प्रसिद्ध *स्क्रियूटेप लैटर्स* (न्यू यार्क: मैक्मिलन पब्लिशिंग कं., 1973) में शैतान के पुराने सेवक के लिए ''नागदौना'' नाम का इस्तेमाल किया है। 9:1-11 में दिए गए तारे पर टिप्पणियों के लिए अगला पाठ देखें। [36]कई लेखक यह उल्लेख करते हैं कि यह विपरीत दिशा में होने वाला मारा का आश्चर्यकर्म था: मारा (जिसका अर्थ ''कड़वा'' है) का खारा पानी मीठा हो गया था (निर्गमन 15:25-26)। [37] ''नागदौना'' यूनानी शब्द *apsinthon* का अनुवाद है। [38]द *सिंपल इंग्लिश*™ *बाइबल, इंटरनैशनल एडिशन* (डैलस: इंटरनेशनल बाइबल फाउंडेशन, 1980)। [39]पहली तुरही पर चर्चा करते हुए, पेड़ों के अविवेकी विनाश का उल्लेख करें; दूसरी और तीसरी तुरहियों के सम्बन्ध में, पानी के दूषित होने का उल्लेख किया जा सकता है; और चौथी तुरही हमें वायु प्रदूषण का स्मरण करा सकती है। बहुत पहले मनुष्य जाति को पृथ्वी का भंडारी बनाया गया था (उत्पत्ति 1:28; 2:15) परन्तु हमने भंडारीपन का काम ईमानदारी से नहीं किया। एक दिन हमें अपने भंडारीपन का हिसाब देना होगा। (देखें 1 कुरिन्थियों 4:9.) सांसारिक भंडारीपन का महत्व उतना नहीं है, जितना आत्मिक भंडारीपन का है, परन्तु महत्व है अवश्य। [40]हमने पहले ही कई घटनाएं देखी हैं, जिन्हें शाब्दिक अर्थ में नहीं लिया जा सकता। आकाश से लहू नहीं गिरता; पहाड़ समुद्र में नहीं गिराए जाते; तारे जमीन पर नहीं गिरते। अन्तिम तुरही की व्याख्या ''गिरते तारे'' के रूप में की गई है (अन्य शब्दों में, उल्का पिंड के पृथ्वी के वातावरण में गिरना), परन्तु ''तारे का गिरना'' *मूल*तारा नहीं है।

[41]अनुवादों में SEB आदर्श है, जिसमें असंगति को दूर करने का प्रयास किया गया है। इसमें कहा गया है, ''दिन में केवल एक तिहाई चमक थी और रात दो तिहाई काली थी।'' परन्तु ये मूल शास्त्र के शब्द नहीं हैं। [42]हेनरी बी. स्वेट, द *अपोकलिप्स ऑफ़ सेंट जॉन* (कैंब्रिज: मैक्मिलन कं., 1908; रीप्रिंट, ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., तिथि नहीं), 113. [43]लियोन मौरिस, *रैवलेशन,* संशो.संस्क., द टिंडेल न्यू टैस्टामेंट कमैंट्रीज़ (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1987), 120. [44]पाठ में और टिप्पणियों में मैंने कुछ निष्कर्षों की बात की थी, विशेषकर उनकी जो पुराने नियम के संकेतों से सम्बन्धित हैं। मैंने ''स्वर्ग से ओले और आग को अटोमिक गिरावट के अर्थ'' जैसी अपरिचित व्याख्याओं का उल्लेख करने की ओर ध्यान नहीं दिया। [45]जुडसोनिया, आरकैंसा में यह पाठ पढ़ाते हुए मैंने क्लास से विचार पूछे जिनके आधार पर परमेश्वर हमें प्राकृतिक विपदाओं में से सिखाने की कोशिश कर रहा हो सकता है। पाठ में दिए गए विचारों के अलावा उन्होंने ये सुझाव दिए: (1) जो *सम्पत्तियां* हमारे पास हैं वास्तव में हमें उनकी आवश्यकता नहीं है। (2) हमें एक-दूसरे की आवश्यकता है। (3) परमेश्वर किसी मनुष्य का पक्ष नहीं करता। [46]हेली, 219. [47]एल्बर्ट ई. ब्रमली,arr., "This World Is Not My Home," *सौंग्स ऑफ़ द चर्च,* सम्पा. आल्टन एच.हावर्ड (वेस्ट मोनरो, लुइसियाना: हावर्ड पब्लिशिंग कं., 1977)। [48]माइकल विल्कोक, *आई सॉ हैवन ओपन्ड: द मैसेज ऑफ़ रैवलेशन,* द बाइबल स्पीक्स टुडे सीरीज़ (डाउनर्स ग्रोव, इलिनोइस: इंटरवर्सिटी प्रैस, 1975), 95. [49]कुछ अनुवादों में यहां ''स्वर्गदूत'' है, परन्तु हस्तलिपि का प्रमाण ''उकाब'' के पक्ष में है। उकाब का इस्तेमाल इसलिए किया गया क्योंकि इसके शक्तिशाली पंख इसे ''बीच आसमान में'' उड़ने में सहायता करते हैं और यह शिकारी पक्षी है, इस कारण पहली शताब्दी में इसे अशुभ माना जाता था। अमेरिका में हम में से अधिकतर लोग इसे इस प्रकार से नहीं देखते (उकाब हमारा राष्ट्रीय पक्षी है); सो अमेरिका में सिखाने वाले सिफारिश करें कि उनके सुनने वाले आसमान में चक्कर लगाते *गिद्ध* का विचार करें। [50]प्रकाशितवाक्य की पुस्तक में, ''पृथ्वी पर रहने वालों'' गैर मसीहियों अर्थात अविश्वासियों के लिए इस्तेमाल किया गया है, जिनका ''मोह'' ''पृथ्वी पर'' लगा है (कुलुस्सियों 3:2; KJV)।

[51]''हाय के लिए अंग्रेजी और यूनानी समानांतर दोनों में ... उजाड़ने वाली और शोक से भरी आवाज़

है'' (राबर्ट माउंस, द *बुक ऑफ़ रैवलेशन,* द न्यू इंटरनैशनल कमैंट्री ऑन द न्यू टैस्टामेंट सीरीज़ [ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1977], 329)। [52]''तुरही की आवाज़'' और ''कानों में उंगलियां डालना'' वाक्यांशों का इस्तेमाल प्रतीकात्मक रूप में किया गया है।

विचार एवं चर्चा के लिए प्रश्न

1. सुबह नींद से ज़बर्दस्ती उठाए जाने पर आपको कैसा लगता है ? प्रभु द्वारा आत्मिक नींद से जगाए जाने पर क्या लोगों को अच्छा लगता है ?
2. बाइबल में तुरहियों के कुछ इस्तेमाल कौन से हैं ?
3. यरीहो की विजय में तुरहियों के इस्तेमाल (यहोशू 6) और नगर की चारदीवारी का पहरा करने वालों (यहेजकेल 33:1-6) द्वारा तुरहियों के इस्तेमाल का अर्थ बताने को तैयार रहें।
4. यह कहने के कि सात तुरहियों का एक उद्देश्य (शायद प्रमुख उद्देश्य) *चेतावनी* देना था, पाठ में क्या कारण बताए गए हैं ?
5. पहली चार तुरहियों की तुलना निर्गमन की पुस्तक में बताई दस आपदाओं से करें। किस प्रकार वे एक-दूसरे से मिलती-जुलती हैं ? किस प्रकार वे एक दूसरे से अलग हैं ?
6. पहली शताब्दी में लोग प्रकृति को किन चार श्रेणियों में बांटते थे ? बताएं कि ये चार श्रेणियां किस प्रकार पहली चार तुरहियों से सम्बन्धित हैं।
7. बताएं कि पहली तुरही बजाए जाने पर क्या हुआ।
8. बताएं कि दूसरी तुरही बजाए जाने पर क्या हुआ।
9. बताएं कि तीसरी तुरही बजाए जाने पर क्या हुआ। ''नागदौना'' क्या है ?
10. बताएं कि चौथी तुरही बजाए जाने पर क्या हुआ।
11. लोगों को चेतावनी देने की प्राकृतिक आपदाओं के परमेश्वर के इस्तेमाल पर चर्चा करें।
12. पाठ में जिन तीन कारणों को बताया गया है, हो सकता है कि परमेश्वर प्राकृतिक आपदाओं के द्वारा हमें सिखाने के लिए उनका इस्तेमाल कर रहा हो। वे आपदाएं कौन सी हैं ? क्या आप अन्य संदेशों पर विचार कर सकते हैं, जो परमेश्वर विपत्ति के आने पर हमें सिखाना चाहता है ?
13. *आप* किस प्राकृतिक आपदा से सबसे अधिक डरते हैं ?

तुरही बजाते एक स्वर्गदूत (8:2, 6)

पहली तुरही बजाई जाती है (8:7)

दूसरी तुरही बजाई जाती है (8:8, 9)

तीसरी तुरही बजाई जाती है (8:10-11)

चौथी तुरही बजाई जाती है (8: 10-11)